शिव संस्कृत ग्रन्थमाला

१३

मातृकाभेदतन्त्रम्

हिन्दी व्याख्या सहित

हिन्दीटीकाकारः

रघुनाथ दूबे

एम. ए. (संचालक)

उच्च नक्षत्रीय ज्योतिष अनुसन्धान केन्द्र

फ्रेजर रोड, पटना

सम्पादकः

ओमप्रकाश मिश्र

एम. ए., बी. एड., आचार्य (साहित्य, योगतन्त्र)

शिव संस्कृत संस्थान, वाराणसी

२००५

विषय-प्रवेश

सम्पूर्ण मातृकाभेदतन्त्र चण्डिका शंकर (शिव-पार्वती) संवाद रूप में १४ पटलों में विभक्त है। इस तन्त्र में सोना-चाँदी बनाने का उपाय, सन्तानोत्पत्ति नियम और कुण्डलिनी ही सारे भोगों को भोगती है, जीव नहीं ऐसा ही विचार प्रगट किया गया है। भोग से ही योग और योग से ही मोक्ष की प्राप्ति होती है ऐसा ही विचार इस तन्त्र के द्वारा प्रगट किया गया है। देह के भीतर स्थित कुण्डों के सम्बन्ध में भी इस तन्त्र में विस्तृत जानकारी दी गयी है। इस तन्त्र में भगवान् शिव के निर्माल्य में अग्राह्यता का हेतु तथा वैदिक रीति से ही शिव पूजन की प्रधानता दी गयी है। मद्यपान की प्रशंसा के साथ ही साथ मद्य के गन्ध को दूर करने की विधि और उसके शोधन के सम्बन्ध में भी इसमें पूर्ण विवरण दिया गया है। पारद से शिव लिङ्ग का निर्माण, पारद भस्म के निर्माण की प्रक्रिया एवं पारद भस्म की विशेषता आदि रसायनिक प्रक्रियाओं का भी विस्तार से वर्णन किया गया है। शक्ति उपासना के क्रम में सप्तशती की पाठ-विधि, शक्तिरूपी गुरु कवच, शक्तिरूपी गुरु स्तोत, त्रिपुरा के मन्त्र, पूजन एवं आराधना विधि चामुण्डा के मन्त्र, पूजन एवं आराधना विधि के साथ ही साथ त्रिपुर सुन्दरी के मन्त्र एवं उपासना विधि पर भी इसमें विशेष बल दिया गया है तो वहीं पर नानाप्रकार से निर्मित शिवलिङ्ग पूजन और उसके माहात्म्य के साथ ही साथ वैदिक रीति से शिवपूजन की प्रधानता ही इस ग्रन्थ की अपनी एक अलग विशेषता है।

संक्षेप में प्रति पटल में प्रतिपादित विषयों का विवेचन किया जा रहा है।

प्रथम पटल में २३ श्लोक है। इस पटल में सम्वल (सिंगरफ) को शुद्ध करने की विधि के साथ पारा निर्माण की विधि का वर्णन भी किया गया है। इस अध्याय में पारा से चाँदी निर्माण की विधि का भी उल्लेख किया गया है जो मूलत: एक रासायनिक प्रक्रिया है एवं पूर्णत: आयुर्वेद का अङ्ग है एवं औषधि निर्माण की भी प्रक्रिया है। इसी पटल में मद्य (शराब) को गन्धहीन करने की प्रक्रिया के साथ ही साथ गन्धहीन करने के लिये मन्त्रों का भी वर्णन किया गया है।

दूसरे पटल में २२ श्लोक है। इस पटल में मणिपुर, नाभिपद्म और कुण्डलिनी आदि का वर्णन तथा मानव शरीर में इसके सञ्चार की प्रक्रिया के साथ

ही साथ सन्तानोत्पत्ति नियम, मानव शरीर में वीर्य की स्थिति और समागम के बाद गर्भ की वृद्धि आदि का विस्तार से वर्णन किया गया है। यह मूलत: कामशास्त्र (Sexology) का विषय है जो शिव-पार्वती संवाद रूप में वर्णित है।

तीसरे पटल में ४५ श्लोक है। तीसरे पटल में मानव जीवन में भोगों की अनिवार्यता और कुण्डलिनी ही सारे भोगों को भोगती है जीव नहीं, ऐसा ही विचार प्रकट किया गया है। भोग से ही योग और योग से ही मोक्ष की प्राप्ति होती है। इस कारण से भोग मानव जीवन का एक अत्यन्त आवश्यक अंग है ऐसा विचार इस ग्रन्थ के द्वारा इस पटल में प्रकट किया गया है। इसी पटल में मद्यपान की प्रशंसा और ब्राह्मणों के लिये मद्यपान की अनिवार्यता पर विशेष रूप से जोर दिया गया है और इसकी विशेषता का वर्णन भी किया गया है। इस सम्बन्ध में चीनाचार तन्त्र के श्लोकों को उद्धरित कर मद्य-मांस और मछली आदि के शोधनविधि भी इस पटल में वर्णित है तथा इसकी प्रशंसा भी की गयी है। यह पटल मूलत: कौल तन्त्र का ही एक अङ्ग है, जिसे पूर्णत: गुप्त रखने का निर्देश इस पटल में दिया है।

चौथे पटल मे ३० श्लोक हैं। इस पटल में शिव की निर्माल्यता, जीवों का ८४ लाख योनियों में भ्रमण, मद्यपान से मुक्ति तथा महाशंख माला (मानव अँगुलियों की हड्डियों से निर्मित माला) से ही महाविद्या की उपासना का वर्णन किया गया है। महाकाल संहिता के गुह्य कालीखण्ड में भी मानव अँगुलियों के हड्डियों से निर्मित माला को ही महाशंख माला कहा गया है जिसकी विशेषता पर विशेष रूप से चर्चा की गयी है। कहा गया है कि महाशंख के माला से ही सभी महाविद्याओं की सिद्धि मिलती है। शक्ति उपासना में महाशंख की माला को ही सर्वोच्चता प्रदान की गयी है। इसी पटल में सुरा देवी की महिमा तथा उसकी तुलना गंगाजल और तुलसीदल से भी की गयी है तथा इसे सर्वश्रेष्ठ सिद्ध किया गया है। यह भी मूलत: कौल तन्त्र से ही सम्बन्धित पटल है।

पाँचवें पटल में ४३ श्लोक हैं। इस पटल में पारद भस्म निर्माण की प्रक्रिया में शिवपूजन अर्थात् विशेष रूप से लिङ्गपूजन की अनिवार्यता पर जोर दिया गया है। कहा गया है कि विना शिवलिङ्ग पूजन के और शिवमन्त्र जप के पारद भस्म का निर्माण कदापि नहीं किया जा सकता। इस पटल में तोडल तन्त्र में दिये गये विशेपरूप से लिङ्ग पूजन की विधि से ही पूजन करके मन्त्र जप के बाद ही पारद भस्म निर्माण का निर्देश दिया गया है। पारद भस्म निर्माण के क्रम में घृत कुमारी, काली तुलसी और स्त्रियों के मासिक धर्म वाले रक्त वस्त्र की उपयोगिता तथा

इसके द्वारा पारद शोधन की रासायनिक प्रक्रिया के साथ ही साथ स्वर्ण वनाने की विधि पर भी उपासनादि की महत्ता सिद्ध की गयी है। यह पटल मूलत: रासायनिक प्रक्रिया तथा शिवोपासना दोनों का ही सम्मिश्रण मात्र है।

छठे पटल में ६९ श्लोक दिये गये हैं। इस पटल में समस्त रोगों से मुक्ति हेतु निर्दिष्ट उपायों का वर्णन किया गया है। इसमें सूर्य एवं चन्द्रग्रहण जैसे विषयों पर कामशास्त्र की प्रकिया में समागम पर विशेप जोर दिया गया हैं। शक्ति के ही वायें एवं दाहिने नेत्र में चन्द्र एवं सूर्यग्रहण निहित है ऐसा विचार इस पटल में किया गया है। इस पटल का एक भाग कामशास्त्र से सम्वन्धित है तो दूसरे भाग में चामुण्डा देवी के मन्त्र और उसकी उपासना विधि, पूजन और पंचतत्व (पाँच प्रकार से) से अर्घ्य देने का विधान बताया गया है। कहा गया है कि पञ्चतत्व से ही चामुण्डा देवी की उपासना करनी चाहिये और उसी से अर्घ्य आदि भी देना चाहिये तभी सिद्धि मिल सकेगी अन्यथा नहीं। कालिका देवी के मन्त्र पूजन एवं उपासना विधि के साथ ही साथ पञ्चतत्व से ही कालिसूक्त के द्वारा कालिका को अर्घ्य देने का निर्देश इस पटल में दिया गया है। यह भाग भी मूलत: कौल उपासना का ही अंग है। इसके तीसरे भाग में सप्तशती की विशेष पाठविधि तथा न्यास और ध्यानादि का वर्णन सांकेतिक रूप में दिया गया है और इसी की अनिवार्यता पर विशेष रूप से बल दिया गया है। इसके अतिरिक्त नवाक्षर मन्त्र जिसमें ६ वीज मन्त्र हैं इसी के जप पर विशेष रूप से वल दिया गया है। इस पटल में मूलत: शक्ति उपासना की अनिवार्यता को ही स्वीकार किया है।

सातवें पटल में ६९ श्लोक है। इसके प्रथम भाग में साधनापथ के अग्रसर साधकों के प्रात: कृत्यादि कर्मों का साङ्गोपाङ्ग वर्णन किया गया है। दूसरे भाग में त्रिपुरसुन्दरी के मन्त्र, पूजन एवं उपासना पद्धति का वर्णन किया है और तीसरे भाग में साधना तर्पणादि कार्यों का पूर्णरूप से उल्लेख और इसकी अनिवार्यता पर वल दिया गया है। इस सन्दर्भ में भी शिवलिङ्ग पूजन की महत्ता को भी प्रकाश में डाला गया है। इसी पटल में शक्तिरूपी गुरु कवच और स्तोत्र भी दिये गये हैं, जो सामान्यरूप से किसी भी पुस्तकों में नहीं मिलते। कवच एवं स्तोत्र की महत्ता पर भी विशेष रूप से प्रकाश डाला गया है तथा त्रिकाल सन्ध्या का अलग-अलग ध्यान भी दिया गया है। इसी अध्याय में विभिन्न प्रकार के शिवलिङ्ग निर्माण कर उसकी पूजन विधि तथा उससे प्राप्त फलों के साथ पार्थिव शिवलिङ्ग के पूजन की सर्वोच्चता पर प्रकाश डाला गया है। शिवलिङ्गों के प्रमाण के सम्बन्ध में भी

आवश्यक जानकारी दी गयी है । इसी पटल में गोबर, मिट्टी, बालू, लोहा, पीतल, ताँबा, चाँदी, सोना और अष्टधातु से निर्मित शिवलिङ्ग की उपासना एवं फल प्राप्ति को भी दर्शाया गया है तथा तोडल तन्त्रानुसार ही द्वारा षोडषोपचार लिङ्गपूजन पर बल दिया गया है । मूलतः यह पटल भी शिव–शक्ति दोनों की ही उपासना का ही अंग है ।

आठवें पटल में ३४ श्लोक हैं । इस पटल में शिवलिङ्ग की महत्ता विशेष रूप से पारद शिवलिङ्ग की सर्वोच्चता के साथ ही साथ पारद में त्रिदेवों की (ब्रह्मा, विष्णु और महेश) उपस्थिति आदि का भी वर्णन किया गया है । इस कारण से पारद शिवलिङ्ग का निर्माण करके ही शिवलिङ्ग पूजन करने का निर्देश दिया गया है । पूजन के बाद षडक्षर शिवमन्त्र जपने का विधान भी इसी पटल में दिया गया है । इसी पटल में पार्थिवशिवलिङ्ग की उपासना तथा पूजन तोडलतन्त्र के ही निर्देशानुसार करने पर बल दिया गया है । पूजन एवं जप के बाद हवन, तर्पण और मार्जन आदि की अनिवार्यता को भी यहाँ दर्शाया गया है । राजसी पूजन के बाद ही पारद का शिवलिङ्ग निर्माण करना चाहिये ऐसा इस ग्रन्थ का निर्देश है । इस पटल में पारा से शिवलिङ्ग निर्माण एवं पारद भस्म बनाने की प्रक्रिया का विशद वर्णन है । मूलतः यह पटल रासायनिक प्रक्रिया और शिवपूजन दोनों का ही सम्मिलित रूप है ।

नवें पटल में ३१ श्लोक है । इस पटल में द्वादश पार्थिव शिवलिङ्ग बनाकर तोडल तन्त्र के निर्देशानुसार षोडषोपचार पूजन करने का निर्देश है । पूजन के बाद षडक्षर शिव मन्त्र जपने का निर्देश तथा पुनः षोडषोपचार पूजन के बाद ही पारद भस्म बनाने की प्रक्रिया पर जोर दिया गया है । इस पटल में पूजन, जप, हवन, तर्पण, मार्जन तथा बेलपत्र के द्वारा विशेष रूप से हवन करने का निर्देश भी दिया गया है और अन्त में हेलकी मन्त्र जपने का विधान कहा गया है । हेलकी मन्त्र के सम्बन्ध में कहीं कोई संकेत नहीं है और न यह मन्त्र किसी पुस्तक में ही देखने को मिलता है कि हेलकी मन्त्र क्या है? आगे की पंक्तियों में यह कहा गया है कि विश्वेश्वर ही इसकी रक्षा करते हैं । इस कारण से सम्भवतः षडक्षर शिवमन्त्र में ही ह्रीं क्रीं लगाकर सम्पुट करके ही शिवमन्त्र जपने का निर्देश हो । इसी कारण से ही यहाँ ह्रीं बीजमन्त्र से सम्पुटित षडक्षर मन्त्र जपने को कहा जा रहा है । इसी पटल में भस्म के गुणों पर भी प्रकाश डाला गया है । यह पटल भी रासायनिक प्रक्रिया का ही एक भाग है, जिसमें शिवोपासना भी सन्निहित हो गया है ।

दसवें पटल में २४ श्लोक है । इस पटल में गुरु की महत्ता एवं साधनासिद्धि के क्षेत्र में गुरु की भूमिका और उसकी अनिवार्यता पर विशेष रूप से बल दिया गया है । कहा गया है कि गुरु के द्वारा प्राप्त मन्त्रों की उपासना से ही साधना-सिद्धि क्षेत्र में पूर्णरूप से सफलता प्राप्त होती है । गुरु-कृपा के बिना सिद्धि नहीं मिलती ऐसा निर्देश इस पटल में किया गया है । गुरु ही भावना है और भावना ही सिद्धि का मूल आधार स्तम्भ है । इसी कारण से गुरु साधना क्षेत्र का एक अत्यन्त नहत्त्वपूर्ण अंग है । सम्पूर्ण तन्त्रशास्त्र की तरह इस अध्याय में भी गुरु की श्रेष्ठता का विशद वर्णन किया गया है । इस अध्याय में भी तोडल तन्त्र के माध्यम से उपासना और पूजा पर बल दिया गया है । गुरु ही शक्ति उपासना का मूल स्रोत है । इस कारण गुरु ही सर्वस्व है । मन्त्रों को साक्षात् ब्रह्मस्वरूप मानकर गुरु आज्ञा से ही मन्त्र जाप करना चाहिये उससे ही सिद्धि मिलेगी ऐसा ध्रुव मत इस पटल में प्रकट किया गया है । गुरु एवं मन्त्र की महत्ता ही इस पटल का मुख्य विषय है । इस अध्याय के दूसरे भाग में बलि पर जोर दिया गया है । कहा गया है कि निर्धन को भी प्रत्येक वर्ष अवश्य ही बलि करना चाहिये; क्योंकि बलि भी शक्ति उपासना का एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अंग है और बलि प्रदान किये बिना सिद्धि कदापि नहीं मिल सकती ऐसा मत इस पटल में व्यक्त किया है । बलि करने के बाद बलि के मांसों का सेवन पर भी इस पटल में जोर दिया गया है । यह भी कहा गया है कि यज्ञ के बचे शेष भाग को यज्ञकर्त्ता को अवश्य ही सेवन करना चाहिये । यदि यज्ञकर्त्ता उसका सेवन नहीं करता तो उसे यज्ञ का सम्पूर्ण फल कभी भी नहीं प्राप्त होगा । यह भी कहा गया है कि कलिकाल में अश्वमेधादि यज्ञ नहीं किया जा सकता । इस कारण से शक्ति उपासना के क्रम में अवश्य ही बलि प्रदान करना चाहिये । इस पटल में तन्त्र को ब्रह्मस्वरूप मानकर इसकी श्रेष्ठता की तुलना वेद एवं शास्त्रों से की गयी है तथा तन्त्र की सर्वोच्चता का वर्णन किया गया है ।

ग्यारहवें पटल में ४४ श्लोक है । इस पटल में निर्जन वन प्रदेश, तालाब, नदी या कुएँ के पास विशाल मण्डप निर्माण कर उसे पूरी तरह सजाकर के ही अपने इष्ट देवी के पूजन का निर्देश दिया गया है । विभिन्न शक्ति-उपासक ग्रन्थों में दिये गये ६४ प्रकार के राजसी पूजन से ही अपने इष्ट देवी का पूजन करना चाहिये और पूजन के क्रम में समस्त श्रृङ्गार की वस्तुयें भी चढ़ानी चाहिये फिर उसके बाद अपने गुरु को अपने सामर्थ्य के अनुसार ही दक्षिणा देना चाहिये । पूर्णाहुति के बाद मन्त्र जप का विधान बताया गया है । कहा गया है कि ऐसी पूजा से साधक अपने सात पीढ़ी

तक के पूर्वजों को मुक्ति दिलाता है और स्वयं मेरे निवास (कैलास) पर निवास करता है। यज्ञ की पूर्णाहुति के बाद यज्ञसूत्र धारण करने का विधान एवं उसकी उपयोगिता पर भी विशेष रूप से प्रकाश डाला गया है तथा उसका प्रमाण भी दिया गया है कि किस प्रकार से यज्ञसूत्र धारण करना चाहिये। इस पटल में शक्ति विषयक अपने इष्ट देवी का विशुद्ध वैदिक रीति से ही पूजन करने का निर्देश दिया गया है। कुल मिलाकर यह पटल राजसीपूजन का विशेष अंग है। यहाँ विस्तार से पूजा एवं उपासना पर बल दिया गया है तथा तन्त्रसार और धृत यामल नामक ग्रन्थों में दिये गये विधियों के अनुसार ही पूजन करने को कहा गया है। इसके अतिरिक्त अन्य मार्गी उपासकों के लिये भी यज्ञ सूत्र धारण करने की विधि इस पटल में वर्णित है।

बारहवें पटल में ७० श्लोक है। इसके प्रथम भाग में शालिग्राम, कलश, चित्र, जल, पुष्प और पुस्तिका पर पूजन करने का निर्देश दिया गया है। यह भी कहा गया है कि शिवलिङ्ग की उपासना पूजा में पार्थिव शिवलिङ्ग की ही पूजा करनी चाहिये। यहाँ यह भी कहा गया है कि शालिग्राम और मणि आदि पर यन्त्र का निर्माण नहीं करना चाहिये। प्रतिमा के साथ ही साथ या मन्त्र के साथ ही साथ पूरक के रूप में घट (कलश) स्थापना भी अवश्य करनी चाहिये; क्योंकि ऐसा किये विना साधक की पूजा-उपासना निष्फल चली जायेगी। कलश में सभी देवी-देवता अपने-अपने रूप में निवास करते हैं। इस कारण से अवश्य ही कलश स्थापना करनी चाहिये ऐसा निर्देश इस पटल में दिया गया है। यहाँ मन्त्र के साथ ही कलश की अनिवार्यता पर बल दिया गया है। यन्त्र के साथ ही चित्र भी होना चाहिये ऐसा मत इस पटल में प्रकट किया गया है। इसके बाद इस पटल में शिवलिङ्ग पूजन की महत्ता को भी दर्शाया गया है। इसी पटल में सभी प्रकार के निर्मित शिवलिङ्ग पूजन से प्राप्त फलों का भी वर्णन किया गया है एवं विल्वपत्र (वेलपत्र) की महत्ता पर विशेष रूप से प्रकाश डाला गया है। कहा गया है कि एक विल्व-पत्र चढ़ाने से हजारों स्वर्णपुष्प के बराबर फल प्राप्त होता है। शिव-पूजन से ही सभी देवताओं का पूजन होता है। इस कारण अवश्य ही शिवपूजन करना चाहिये। इसीलिए लिङ्ग पूजन से ही सारे देवी देवता प्रसन्न होते हैं ऐसा विचार इस पटल में प्रकट किया गया है। इसके दूसरे भाग में त्रिपुरसुन्दरी की उपासना के सम्बन्ध में निर्देश दिया गया है। यह भी विचार प्रकट किया गया है कि सारी महाविद्यायें एक ही हैं। इन्हें वर्णभेद और उपासना भेद के कारण ही अलग-

अलग नामों से जाना जाता है । इसमें मूलतः किसी भी प्रकार का कोई भी तात्त्विक भेद नहीं है । इसी कारण से एक ही महाविद्या की उपासना से सारी महाविद्याओं की उपासना सम्भव है । साधक के द्वारा मन्त्रों के गलत उच्चारण से साधक के जीवन में क्रिया-प्रतिक्रिया होती है तथा उसका क्या प्रभाव किस प्रकार की आने वाले दिन में पड़ता है इसका भी साङ्गोपाङ्ग वर्णन इस पटल में किया गया है । कहा गया है कि मन्त्रों के सम्बन्ध में उठ रहे भ्रान्तियों से गुरु के द्वारा ही मुक्ति मिलती है और अन्त में गुरु महिमा पर इस अध्याय में विशेष रूप से जोर दिया गया है ।

तेरहवें पटल में २४ श्लोक हैं । इस पटल में शक्ति उपासना के सन्दर्भ में माला विपयक विशेषताओं का पूर्णरूप में विवरण दिया गया है । देवी-देवता की उपासना किस-किस माला से करनी चाहिये इसके सम्बन्ध में यहाँ पूर्ण निर्देश दिया गया है । यहाँ पर महाशंख माल की सर्वोच्चता बतायी गयी है तथा यह भी कहा गया है कि शक्ति उपासना में बिना महाशंख के माला के सिद्धि कदापि नहीं मिल सकती । इस कारण से साधक को शक्ति की उपासना शंख की माला से ही करनी चाहिये । तथा इसी के द्वारा उपासना करने से साधक को तत्काल सिद्धि मिलती है । काली, तारा, धूमावती और त्रिपुरसुन्दरी की उपासना किस माला के करनी चाहिये यही निर्देश इस पटल में दिया गया है । इसके अतिरिक्त गणापत्यों के लिये हाथी दाँत की माला तथा वैष्णवों के लिये तुलसी माला से उपासना करने पर बल दिया गया हैं । इस अध्याय में माला की महत्ता पर विशेष रूप से प्रकाश डाला गया हैं । माला में दिये गये गाँठों का भी विस्तार से वर्णन इसी पटल में है । जप के नियम एवं प्रभावों का भी यहाँ विस्तार से वर्णन किया गया है । कुल मिलाकर यह माला निर्णय अध्याय ही है ।

चौदहवें पटल में ४२ श्लोक हैं । इस पटल में दिव्य भोग, बीर भोग और पशु भोग के सम्बन्ध में विचार प्रकट किया गया है और साधक को सपत्नीक पूजा-उपासना करने पर ही बल दिया गया है । कुण्डलिनी ही सारे भोगों को भोगती है जीव नहीं, ऐसा विचार इस पटल में प्रगट किया गया है । इस पटल में वीरभाव की उपासना पर विशेष रूप से ही बल दिया गया है और मद्यपान की प्रशंसा की गयी है । कहा गया है कि वीरभाव की उपासना के विना मद्यपान से सिद्धि नहीं मिल सकती । यहाँ पर साधना के क्रम में गुरुपूजन पर विशेष बल दिया गया है और कहा गया है कि विना गुरुपूजन के सिद्धि नहीं मिलती । इस कारण से सिद्धि एवं उपासना के पूर्व गुरुपूजन आवश्यक है । यहाँ पर गुरु का सपत्नीक पूजन करने

का विधान बताया गया है । गुरुपत्नी की महत्ता पर भी यहाँ विशेपरूप से निर्देश दिया गया है तथा यह भी कहा गया है कि गुरुपत्नी साक्षात् गुरु है इस कारण से गुरु पत्नी का पूजन साधक को अवश्य ही करना चाहिये । साधना के क्षेत्र में गुरु साधक का पग-पग पर रक्षा करता है । इस कारण से सव कुछ करके भी गुरु पूजन करने और गुरु को यथेष्ठ दक्षिणा देने का विधान भी वताया गया है । गुरु की न तो निन्दा करनी चाहिये और न गुरु की निन्दा सुननी चाहिये । इससे साधना क्षेत्र में हानि होती है ऐसा ही निर्देश इस पटल में दिया गया है । इस पटल में यह विचार प्रकट किया गया है कि यदि शिष्य गुरु के सम्पूर्ण तेज को धारण कर ले तो उसे काशी आदि सभी तीर्थ का फल प्राप्त होता है । कुल मिलाकर इस पटल में गुरु महिमा पर विशेष रूप से बल दिया गया है । पटल के अन्त में गुरुपुत्र की महिमा और गुरुपुत्र पूजन पर भी बल दिया गया है ।

मूलतः मातृकाभेदतन्त्र कौल तान्त्रिक, वैदिक उपासना और रसायन प्रक्रिया का ही सम्मिलित रूप है ।

— रघुनाथ दूबे

विषयसूची

प्रथमः पटलः

द्वितीयः पटलः

तृतीयः पटलः

चतुर्थः पटलः

पञ्चमः पटलः

षष्ठः पटलः

सप्तमः पटलः

अष्टमः पटलः

नवमः पटलः

दशमः पटलः

एकादशः पटलः

द्वादशः पटलः

त्रयोदशः पटलः

चतुर्दशः पटलः

●●